बच्चों की शिक्षा पर सामाजिक–भावनात्मक समर्थन का प्रभाव

दीपिका झाला

जब विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चे कक्षा में एक साथ पढ़ते हैं तो शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि तब उन्हें बच्चों को एक दूसरे के प्रति समझ, करुणा और समानुभूति विकसित करना व आपसी भिन्नताओं का सम्मान करना भी सिखाना होता है।

चित्र 1: अपनी ड्राइंग और कविताओं से कक्षा को सजाते बच्चे

अज़ीम प्रेमजी स्कूल मंडावा, सिरोही राजस्थान में एक शिक्षिका के रूप में काम करते हुए बच्चों की शिक्षा पर सामाजिक-भावनात्मक चुनौतियों के प्रभाव के बारे में मेरी समझ गहरी हुई है। भारत की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है, लेकिन मैंने देखा है कि यहाँ पर जो वंचित बच्चे हैं, उनके जीवन की स्थिति काफ़ी ख़राब है। इन बच्चों को कई समस्याओं से निपटना पड़ता है। जैसे– परिवार की वित्तीय परिस्थितियों के कारण दुर्व्यवहार, जेंडर भेदभाव, कुपोषण, बाल श्रम, बीमारियाँ, अव्यवस्थित परिवार, सामाजिक दबाव, आदि। ये कठिनाइयाँ उन्हें उन अवसरों से वंचित करती हैं जो सभी बच्चों को समान रूप से बढ़ने और विकास के लिए मिलने चाहिए। इस लेख में, मैंने कक्षा को समावेशी बनाते हुए पढ़ाने के अपने अनुभवों का वर्णन किया है। इस वर्णन में हमारे स्कूल की कक्षा 8 की छात्रा इन्द्रा के सीखने-सिखाने की परिस्थितियों पर विशेष ज़ोर दिया गया है।

शिक्षक की भूमिका

एक समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण होती है। शिक्षक केवल विषय का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि वे विद्यार्थियों के भावनात्मक कल्याण पर भी ध्यान देते हैं जिसे शैक्षिक अधिगम का अहम आधार माना जाता है। अकसर कक्षाओं में अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आने वाले बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, इसलिए वहाँ शिक्षक को उन भावनात्मक और सामाजिक चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होना

चाहिए जो बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन में बाधा डालती हैं।

अलग-अलग क्षमताओं वाले बच्चों को एक ही कक्षा में रखना समावेशन नहीं कहा जा सकता। समावेशन का मतलब है, कक्षा में ऐसा माहौल बनाना जिसमें कक्षा का हर बच्चा सम्मानित व प्रभावशाली महसूस करे, और उसकी सीखने-सिखाने से सम्बन्धित सभी ज़रूरतों को पूरा किया जा सके। इसके लिए हमें प्रत्येक बच्चे के सामाजिक परिवेश, भावनात्मक स्थिति और पृष्ठभूमि की गहरी समझ होनी चाहिए। समावेशी कक्षा में काम करने से मेरी यह राय मज़बूत हुई है कि यदि हम यह नहीं समझते कि वे किस प्रकार के परिवार से आते हैं, उनकी ज़रूरतें और समस्याएँ क्या हैं, घर पर उन्हें किस प्रकार सहायता दी जाती है, और उनकी क्षमताएँ क्या हैं तो सिर्फ़ अकादमिक शिक्षा देना अपर्याप्त है।

वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बहुत-से बच्चों को कई तरह की व्यक्तिगत चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। उनकी भावनात्मक परेशानी कई रूपों में सामने आ सकती है। जैसे– आत्मसम्मान की कमी, चिन्ता, सामाजिक मेलजोल से दूर रहना, सीखने की प्रेरणा की कमी, आदि।

आठवीं कक्षा की छात्रा इन्द्रा को भी इन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उसका परिवार किराए पर खेती करता है और कभी-कभी वह भी अपने माता-पिता के साथ खेतों में काम करने के लिए जाती है, ख़ासकर कटाई के दौरान। जब वह सातवीं कक्षा में थी तो उसे बुनियादी अक्षर पहचानने में मुश्किल होती थी। वह ऐसे अक्षरों को लेकर भ्रम में पड़ जाती थी जिनका प्रयोग कम होता है। अपने एकान्तप्रिय और अन्तर्मुखी स्वभाव के कारण वह अपने साथियों से बात करने में झिझकती थी। इनमें से कई बच्चों की आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि उससे बेहतर थी।

विश्वास को बढ़ावा देना

इन्द्रा और उसके जैसे दूसरे कई विद्यार्थियों के साथ काम करने से मैंने यह सीखा है कि अगर हम चाहते हैं कि वे बेहतर तरीक़े से सीखें तो हमें उनके साथ जुड़ने और तालमेल बनाने की ज़रूरत है। इन्द्रा का घर मेरे स्कूल के रास्ते में पड़ता था। चूँकि मैं उसकी क्लास टीचर भी थी, इसलिए मैं अकसर उसके घर जाती थी। उसके आसपास के माहौल, जैसे उसके मवेशी, खेती और दिन प्रतिदिन के काम, आदि के बारे में हमारी अनौपचारिक बातचीत होती थी। इसके कारण वह मुझसे खुलने लगी और मुझे व्यक्तिगत स्तर पर उससे जुड़ने का मौक़ा मिला। उसके घर जाने पर ही मैंने देखा कि उसका परिवार काफ़ी आर्थिक कठिनाइयों और दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना कर रहा है। धीरे-धीरे इन्द्रा मेरे साथ सहज हो गई, और स्कूल व सहपाठियों से जुड़ी बातें साझा करने लगी। इससे मुझे उसकी ज़रूरतों के हिसाब से उसके लिए अपनी शिक्षण योजना तैयार करने में मदद मिली, जिसकी शुरुआत अँग्रेज़ी भाषा की बुनियादी बातों से हुई। हमने अक्षर पहचान और ध्वनियों से शुरुआत की। इससे धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास और क्षमता बढ़ी।

साथियों का समर्थन और प्रोत्साहन

मैंने पूरी कक्षा को तीन ऐसे समूहों में विभाजित किया जिनमें

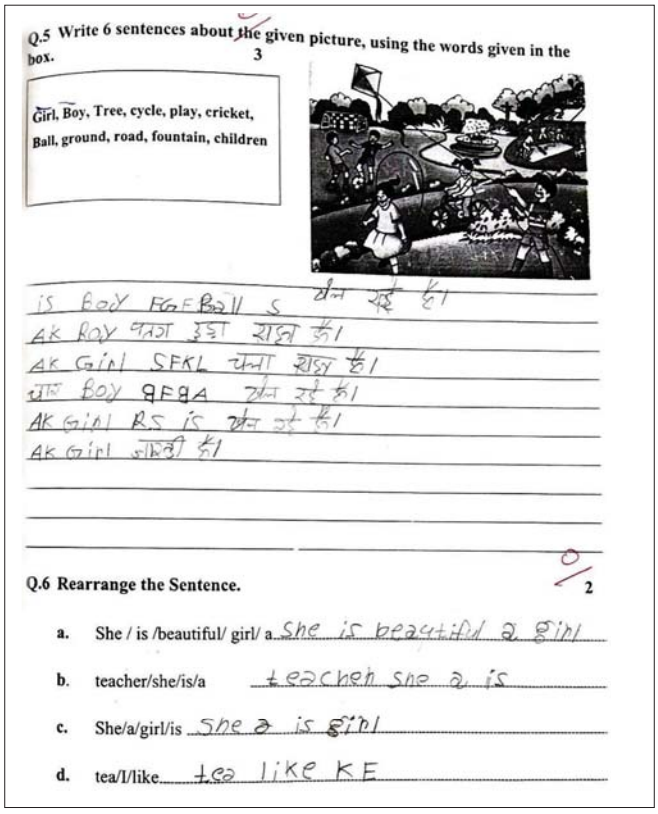

Q.5 Write 6 sentences about the given picture, using the words given in the box. 3

Girl, Boy, Tree, cycle, play, cricket, Ball, ground, road, fountain, children

Q.6 Rearrange the Sentence. 2

a. She / is /beautiful/ girl/ a. She is beautiful a girl

b. teacher/she/is/a teacheh she a is

c. She/a/girl/is She a is girl

d. tea/I/like. tea like KE

चित्र 2 : इन्द्रा के काम का एक नमूना, अगस्त 2023

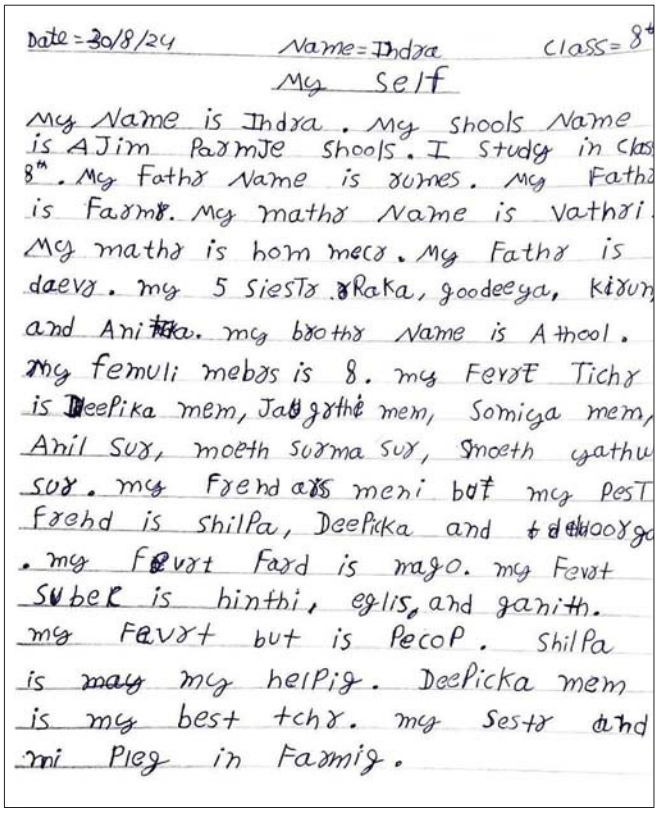

Date = 30/8/24 Name = Indra Class = 8th

My Self

My Name is Indra. My shools Name is AJim ParmJe shools. I study in Class 8th. My Fathr Name is romes. My Fathr is Farmr. My mathr Name is vathri. My mathr is hom mecr. My Fathr is daevr. my 5 siestr Raka, goodeeya, kirun and Anitta. my brothr Name is Athool. my femuli mebrs is 8. my Ferst Tichr is Deepika mem, Jagrthe mem, Somiya mem, Anil sur, moeth surma sur, Smoeth yathu sur. my Frend are meni but my Pest frehd is shilPa, DeePicka and ... my Fevrt Fard is majo. my Fevrt Subek is hinthi, eglis, and ganith. my Fevrt but is PecoP. ShilPa is my helPig. DeePicka mem is my best tchr. my Sestr and mi Pleg in Farmig.

चित्र 3 : इन्द्रा के काम का एक नमूना, अगस्त 2024

अलग-अलग क्षमता वाले बच्चे थे, ताकि वे विभिन्न गतिविधियों और साथियों से सीख सकें। हर समूह में ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि, दोनों जेंडर और अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चे थे। इन्द्रा को शाहिस्ता और शौर्या का भरपूर सहयोग मिला। ये दोनों एल 3 (स्तर-3) की छात्राएँ हैं और शहरी परिवेश से आई हैं। इन दोनों ने उसे पढ़ने-लिखने का अभ्यास करने में मदद की जो अँग्रेज़ी के पीरियड के बाद भी जारी रही।

इन्द्रा के उदाहरण से पता चलता है कि सीखने की प्रक्रिया में भावनात्मक समर्थन का कितना महत्त्व है। जब बच्चों को लगता है कि उन्हें प्यार मिल रहा है, और उनका ध्यान रखा जा रहा है तब उनका शैक्षिक प्रदर्शन या दूसरे कारक चाहे कुछ भी हों, वे सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए अधिक इच्छुक होने लगते हैं। मैंने इन्द्रा को कक्षा में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया, भले ही वह एक बार में सिर्फ़ एक शब्द या एक वाक्य ही क्यों न बोले। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा। जब वह जवाब देने या कक्षा की चर्चाओं में भाग लेने के लिए अपना हाथ उठाती तो दूसरे सभी बच्चे उसे प्रोत्साहित करते। वे चाहते थे कि इन्द्रा उत्तर देने के लिए आगे आए। इतना ही नहीं, वे ताली बजाकर उसके प्रयासों की सराहना भी करते। कक्षा में उसे उसके नाम से पुकारना, उसका उदाहरण देना, कुछ अवधारणाएँ सिखाते समय उससे कुछ ऐसे बुनियादी सवाल पूछना जिनका जवाब वह आत्मविश्वास के साथ दे सके, ऐसे छोटे-छोटे प्रयासों से उसके आत्मसम्मान को बढ़ावा मिला। किसी भी कार्य को पूरा करने के बाद उसके अन्दर आत्मविश्वास और उपलब्धि की जो भावना उत्पन्न होती, वह कितनी भी छोटी क्यों न हो उसके शैक्षिक विकास के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण होती थी।

कक्षा की कार्यनीतियाँ

शिक्षकों के रूप में, हमें हमेशा ही अपनी प्रेरणा के स्तर को ऊँचा उठाए रखने की आवश्यकता होती है। यह तब ज़्यादा ज़रूरी होता है जब हम उन विद्यार्थियों की सहायता कर रहे होते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है। सकारात्मक बदलाव लाने की प्रक्रिया के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपने और विद्यार्थियों के प्रयासों पर भरोसा रखें। एक शिक्षक के रूप में, मैं यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती हूँ कि मेरी शिक्षण विधियाँ सभी विद्यार्थियों को सीखने में मदद करें। ख़ासकर चुनौतियों से भरे सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की। यहाँ कुछ ऐसे तरीक़े दिए गए हैं जो मेरे लिहाज़ से मददगार साबित हुए हैं :

- स्वस्थ माहौल बनाना : स्वस्थ और भावनात्मक रूप से सुरक्षित माहौल विद्यार्थियों को असफलता या आलोचना से डरे बिना उन्हें सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

> **जब हम समावेशी कक्षाएँ बनाकर हर बच्चे की विविधता और विशिष्टता का उत्सव मनाते हैं तो हमारी यह ज़िम्मेदारी भी होती है कि हम एक ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ सभी बच्चे सीख सकें, भले ही उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो।**

- विशिष्ट आवश्यकताओं को समझना : इन्द्रा के मामले में यह ज़रूरी था कि भाषा सीखने के लिए एकदम बुनियादी बातों से शुरुआत की जाए, और जैसे-जैसे उसका आत्मविश्वास बढ़े वैसे-वैसे कठिनाई के स्तर को बढ़ाया जाए।
- सुदृढ़ीकरण : इन्द्रा के सहपाठी, शिक्षक उसकी हर उपलब्धि का जश्न मनाते थे, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो। हर छोटे प्रयत्न की सराहना और पहचान करने से बच्चा प्रेरित होता है।
- साथियों का समर्थन : अब इन्द्रा बात करने में संकोच नहीं करती। उसे अपने सहपाठियों के साथ बातचीत करना अच्छा लगता है। किसी बड़े शब्द को पढ़ने या वाक्य बनाने में अगर उसे सहायता की आवश्यकता होती है तो वह अपने सहपाठियों से पूछ लेती है। साथियों के साथ सीखने से न केवल सामाजिक कौशल विकसित होते हैं, बल्कि सीखने में भी सहायता मिलती है।
- माता-पिता के साथ सम्प्रेषण : माता-पिता के साथ बातचीत करने से विद्यार्थियों को सीखने में काफ़ी मदद मिलती है।

शिक्षकों के लिए एक ऐसी कक्षा संचालित करना बेहद चुनौतीपूर्ण होता है जिसमें हर विद्यार्थी अपनी सीखने की क्षमता के अनुसार सीख सके, और जिस स्तर पर वह है उससे कुछ आगे बढ़ सके।

जब इन्द्रा जैसे विद्यार्थी सीखते हैं, शिक्षकों को बहुत ख़ुशी होती है। अपने विद्यार्थी को वर्णमाला के साथ जूझते, छोटे-छोटे अंश पढ़ते और कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए देखकर शिक्षक को सन्तोष तो होता ही है, उनके मन में आशा की यह भावना भी जागती है कि सभी विद्यार्थी सीख सकते हैं। जब हम समावेशी कक्षाएँ बनाकर हर बच्चे की विविधता और विशिष्टता का जश्न मनाते हैं तो हमारी यह ज़िम्मेदारी भी होती है कि हम ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ सभी बच्चे सीख सकें, भले ही उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। इसलिए विशिष्ट चुनौतियों को समझने, भावनात्मक समर्थन प्रदान करने और विश्वास का निर्माण करने के लिए अटूट प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। यह प्रतिबद्धता न केवल बच्चों के सीखने का समर्थन करेगी, बल्कि उनके कल्याण में भी योगदान देगी।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

दीपिका झाला राजस्थान के सिरोही में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में शिक्षिका हैं। आपको 12 साल के शिक्षण और शोध का अनुभव है। आपने राजस्थान के कई कॉलेजों और स्कूलों में पढ़ाया है।

सम्पर्क : deepika.jhala@azimpremjifoundation.org